रामानन्द सम्प्रदाय में संगीत प्रवृत्ति

अजय कुमार शर्मा

अन्य वैष्णवसम्प्रदायों के समान रामानन्दसम्प्रदाय में संगीत की व्यापकता परिलक्षित होती है, यहाँ के वैष्णव साधक विरक्तसाधु हो या गृहस्थसाधक, चित्त को भगवद्भावसिक्त करने हेतु संगीत के तीनों (गायन-वादन एवं नृत्य) अंगों से जुड़े देखे जाते हैं। अयोध्या की साधना पद्धति सरस है, भले ही वे साधक संसार से विरक्त उपरत होने के कारण ऊपर से रुक्ष प्रतीत होते हों। साधकों के लिये जो आचारशास्त्र हैं, उसमें भी भगवान् के समक्ष गायन-वादन नर्तन के विधान का निर्देश है। भगवत्सम्बन्धी विविध उत्सवों में तो गायन वादन एवं नर्तन का महत्व है ही, साथ ही पूजापद्धति के क्रम में भी नाम संगीतकीर्तन-स्तुतिगायन मानसगायन आदि की आवृत्ति देखी जाती है। राजोपचार में नृत्यगीत को एक अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। रामानन्दसम्प्रदाय के विशिष्ट धाम के रूप में मान्य श्री अयोध्या के सैकड़ों मन्दिरों में अहर्निश स्वरतालबद्ध भगवन्नाम संकीर्तन का होना, विशिष्ट अवसर पर एकाह नवाह पाक्षिक मासिक मासिक वार्षिक स्वरतालबद्ध नामसंकीर्तन का आयोजन इस सम्प्रदाय में संगीत के अन्तः प्रवेश के प्रमाण है।

जहाँ आनन्दरामायण के विलासकाण्ड में नाना विहार विलास का श्रृंगारिक वर्णन है, वहीं महारामायण में कनकविहारी भगवान् की सीता तथा अन्यान्य सखियों के साथ नृत्यगीताद्युक्त ६६ रासलीलाओं का वर्णन है।[१] वाल्मीकिरामायण के अनुसार भगवान की सभा में नृत्यसंगीतादि विशारदों के कार्यक्रम होते ही रहते है-

उपानृत्यन्त काकुत्स्थं नृत्यगीतविशारदाः।।[२]

श्रीरामचरण करूणासिन्धु द्वारा संगृहीत तथा श्रीरामवल्लभाशरण जी कृत रत्नप्रभा नामक टीका के काव्य प्रकाशित रामनवरत्नसारनामक ग्रन्थ में श्रीरामजी के समक्ष नृत्यगीतविशारद सखियों के नृत्य एवं गान का वर्णन मिलता है-

रामस्य परिनृत्यन्ति गीतवादित्रमोहिताः।[३]

इस प्रकार रामानन्दसम्प्रदाय के आराध्य श्रीसीताराम की रसस्वरूपता तथा उनकी उपासना में विविध श्रृंगारिक रस की अवस्थिति का यत्र तत्र दर्शन होता है,, जिसमें संगीत अपने तीनों रूपों में अविनाभाव से विराजमान दृष्टिगोचर होता है।

विरक्त होने पर भी साधुजन भगवद्गुण से रंजित रहते हैं, अतः कालक्षेप के लिये वे संगीत को कहीं पूजा के रूप में, तो कहीं प्रवचन कथा उपदेश के साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। कुछ सन्त एकान्तसाधना के रूप में, तो कुछ उत्सवादि के माध्यम केरूप में इसे धारण किये रहते हैं। कुछ विरक्त महात्मा की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही संगीतात्मक होती है।

भावनाभिव्यक्ति में नृत्यगीतवाद्य एक सशक्त माध्यम है। महात्माजन अपनी सारी इन्द्रियचेष्टाओं से भगवत्कैंकर्य करना चाहते हैं, उनके अनुसार शरीर मन बुद्धि आदि भगवत्प्राप्ति के लिये ही प्राप्त हुए हैं। वाणी का सदुपयोग गीतादि के द्वारा भगवत्प्रीत्यर्थ होना चाहिए। मानस में भक्त की वांछनीय दशा की ओर संकेत करते हुए तुलसीदास जी ने लिखा है-

मम गुन गावत पुलक सरीरा। गद गद गिरा नयन बह नीरा।।

नवधा भक्ति में भी कीर्तनभक्ति का अपना विशिष्ट महत्व है, वाल्मीकि के द्वारा निर्दिष्ट भगवान् के चौदह निवास स्थानों में गान निष्ठा वाले भक्तों का बड़े आदर से परिगणन किया गया है।

सारांशः-

अतः सम्प्रदाय के पारम्परिक सन्त आचार्यों ने साधकों एवं स्वयं के गायन के लिये अनेक पदों की रचना कर विपुल संगीत सामग्री प्रदान की है। स्वयं रामानन्दस्वामी ने वैष्णव मताब्जभास्कर में अनेकों स्थलों पर नामगुणकीर्तन का प्रबल आग्रह दिखाकर भगवान् की उपासना का आदेश दिया है। इतना ही नहीं, डॉ. पीताम्बर बड़थ्वाल के ''रामानन्द की हिन्दी रचनायें'' नामक ग्रन्थ में स्वामी जी के अनेक पद राग

रागिनियों में आबद्ध मिलते हैं, जिसे उनकी संगीतिक निष्ठा तथा प्रवृत्ति के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। सम्प्रदाय का यह सांगीतिक प्रभाव उनक शिष्य-प्रशिष्यों पर भी देखा जाता है। कबीर रैदास आदि के पदों का गायन आज भी शैली विशेष के आधार पर उपलब्ध होता है।

संदर्भ सूची :-

1.महारामायण, पंचम सर्ग, 46

2.वाल्मीकि रामायण 7/42/21

3.श्रीरामनवरत्न 8/20/21

4 राचरितमानस 3/16/11

5 रामचरितमानस 3/35

6.नागरी प्रचारिणी सभा का ी, चैत्र रामनवमी, सं. 2012 वि. (राजा बलदेव दास विड़ला ग्रन्थमाला–2)

7.रामानन्द सम्प्रदाय में संगीत की परम्परा/ अध्याय–3 पृश्ठ नं0–145